The Chitransh Academic & Research
International Journal of Multidisaciplinary Reseaech
An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume1 | Issue 3 |June 2025
ISSN: 3049-303X (Online)
Website: www.thechitranshacadmic.in

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का विद्यालयीन विद्यार्थियों की सीखने की शैली एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव का अध्ययन

Mrs. Jayati Sahu[1], Dr. Shweta Bhatia[2],Dr. Rama yadav[3]

[1] Research Scholar, Hemchand Yadav University, Durg (C.G.)

[2]HOD (Education Depart.), M.J. College Bhilai (C.G.)

[3]Assistant Professor, Kalyan P.G. College, Bhilai Nagar (C.G.)

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: ***01.06.25***

*Accepted:****28.06.25***

Published: ***30/06/25***

Keywords: गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शिक्षण, अधिगम शैली, व्यक्तित्व, विकास, वातावरण, समुदाय।

ABSTRACT

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा आधुनिक समाज की माँग है और चाहे कोई भी क्षेत्र हो, गुणवत्ता की माँग हर जगह है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में उसी शिक्षा का समावेश होता है जो शिक्षा शिक्षण अधिगम में छात्रों की रूचि एवं क्षमता को समझ एवं समाज की आवश्यकताओं की जांच करे और छात्रों की जीविकोपार्जन योग्य बनाए। जब किसी कार्य में उस कार्य से संबंधित सभी गुणों का (व्यावहारिक एवं सैद्धांतिक) समावेश होता है, तो उसे कार्य की गुणवत्ता के रूप में देखा व समझा जाता है। प्राणी के विकास में वातावरण की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वह लगातार वातावरण के संपर्क में होता है और उससे अनुभव प्राप्त करता है। सीखना चरणों में होता है और प्रत्येक चरण में छात्र अलग–अलग तरीकों से सीखते है। घर स्कूली शिक्षा में उत्पन्न होने वाली कठिनाईयाँ अक्सर सीखने की शैली में अंतर के कारण होती है। व्यक्तित्व विकास में वंशानुक्रम व्यक्ति को जन्मजात शक्तियों के सिद्ध करने के लिए सुविधाएँ प्रदान करता है। बालक के व्यक्तित्व पर सामाजिक परिवेश प्रबल प्रभाव डालता है। ज्यो–ज्यों बालक विकसित होता जाता है, वह उस समाज या समुदाय की शैली को आत्मसात कर लेता है जिसमें वह बड़ा होता है। इस प्रकार बालक व्यक्तित्व के आयाम के आधार व्यवहार करता हैं और सीखने की शैली शिक्षा और शिक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसा वरदान है, अगर यह मिल जाए तो जिंदगी संवर जाती हैं। शिक्षा हमें अन्य जीवित प्राणियों से अलग दर्शाती हैं। यह मनुष्य को पृथ्वी का सबसे बुद्धिमान और चतुर प्राणी बनाती हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने और कुछ अलग करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। यह मनुष्यों को सक्षम बनाती है और उन्हें जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करती है।

पूरी शिक्षण प्रक्रिया के दौरान प्राप्त किया गया ज्ञान हम सभी और प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन के प्रति आत्मानिर्भर बनाता है। यह जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरवाजे खोलती है जिससे कैरियर के विकास को बढ़ावा मिले। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा बहुत से जागरूकता अभियान चलाए जा रहे है। यह समाज में सभी व्यक्तियों में समानता की भावना लाती है और देश के विकास और वृद्धि को भी बढ़ावा देती है।

गीता में ''सा विद्या विमुक्ते'' का वर्णन है जिसका अर्थ '' शिक्षा या विद्या वही है, जो हमें बंधनो से मुक्त करें और हमारा हर पहलू पर विस्तार करे'' होता है।

राष्ट्रपति गांधी के अनुसार ''सच्ची शिक्षा वह है जो बच्चों के आध्यात्मिक, बौद्धिक और शारीरिक पहलुओं को उभारती है और प्रेरित करती है इस तरीके से हम सार के रूप में कह सकते है कि उनके मुताबिक शिक्षा का अर्थ सर्वांगीण विकास था।

अरस्तु के अनुसार '' शिक्षा मनुष्य की शक्तियों का विकास करती है, विशेष रूप से मानसिक शक्तियों का विकास करती है ताकि वह परम सत्यम, शिवम् का चिंतन करने योग्य बन सकें।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के उद्दे�य एवं निर्धारित लक्ष्य

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का मतलब ऐसी शिक्षा से है जो अपने निर्माण के उद्देश्यों को अच्छी तरह समझती है और आपके लिए फायेदमंद है। गुणवत्तापूर्ण में प्रायः उसी शिक्षा का समावेश होता हैं जो शिक्षा का शिक्षण अधिगम में छात्रों की रूचि और क्षमताओं को समझे एवं समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करें और छात्रों को जीवनदान देने योग्य बनाए। जानना सीखना इसका अर्थ है ज्ञान को जानना अर्थात जो ज्ञान प्राप्त करने वाले उन्हें ज्ञान के बारे में पता होना चाहिए कि उसका उपयोग कब और कैसे करना है। यह सच भी है कि किसी शिक्षा को हम गुणवत्तापूर्ण तभी कह सकते है जब शिक्षा छात्रों को कुछ भी जानने में उसका सहयोग करें। हम उसी शिक्षा को अच्छी तरह से शिक्षा के लिए उपयोग कर सकते है जो शिक्षा को समाज में एक साथ रहना सिखाती है। जो शिक्षा समाज के सभी कार्यो में सहयोग कर रहना सिखाती है उसी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा कहा जा सकता है।

दुनियाभर में क्वालिटी एजुकेशन प्रदान करने के लिए हर कोई अपने तरीके से भाग ले सकता है। इस खंड में 2030 के लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित किए है–

Corresponding Author: jayatisahu470@gmail.com

1. 2030 तक सुनिश्चित करें कि प्रभावी ढंग से सीखने के लिए लड़कियों के लिए मुफ्त प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की व्यवस्था हो।
2. 2030 तक सुनिश्चित करें कि लड़कियों और लड़कों दोनों की गुणवत्तापूर्ण शुरूवाती विकास और पूर्व प्राथमिक शिक्षा तक पहुंच हो।
3. सस्ती और गुणवत्तापूर्ण तकनीकी, व्यावसायिक और तृतीयक शिक्षा तक समान पहुँच सुनिश्चित करना।
4. रोजगार और एंटरप्रेन्योरशिप के लिए जरूरी कौशल रखने वाले युवाओं और व्यस्कों दोनों की संख्या में वृद्धि करना।
5. शिक्षा में हर तरह के भेदभाव को दूर करना।
6. सार्वभौमिक साक्षरता को सुनिश्चित किया जाना।
7. सतत् विकास, और वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा सुनिशचित करना।
8. समावेशी और सुरक्षित स्कूलों का निर्माण और विकास सुनिश्चित करना।
9. विकासशील देशों के लिए उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति सुविधा का विस्तार करना।
10. विकासशील देशों में योग्य शिक्षकों की आपूर्ति बढ़ाना।

आयाम

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के विभिन्न आयाम इस प्रकार है–

- समता
- स्थायित्वपूर्णता
- प्रासंगिकता
- संतुलित दृष्टिकोण
- पढ़ाई के ऐसे ढंग जो बच्चों को अच्छे लगे।
- जो पढ़ाया गया है, उसके नतीजों पर ध्यान देना।

इस प्रकार गुणवत्तापूर्ण शिक्षा में शिक्षकों का स्थान की महत्वपूर्ण होता हैं। एक अच्छा शिक्षक संवाद करने में अच्छा होना चाहिए। उसे न केवल यह जानना चाहिए कि छात्रों के साथ कैसे संवाद करना हैं बल्कि वह अन्य शिक्षकों और स्कूल अधिकारियों के साथ संवाद में निपूर्ण होता है। खासकर जब छात्रों की समस्याओं को "साझा करने की बात आती है। अच्छे शिक्षक अपने छात्रों के साथ सहानुभूति पूर्ण और धैर्यवान होते है और समझते है कि वे क्या महसूस कर रहे है और उनकी जरूरतें क्या है।

अधिगम प्रकिया में परिवर्तन

सीखने सिखाने की प्रक्रिया का परिवर्तन की इस अवधि में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा और शिक्षकों द्वारा कैसे प्रदान किया जा सकता हैं इसमें मूल–चूल परिवर्तन शामिल है। नामांकन को निम्न प्रकार से संक्षेप में संक्षेपित किया जा सकता है–

Corresponding Author: jayatisahu470@gmail.com

- असीमितों को दूर करने पर अधिक जोर
- सभी के लिए न्यायोचित शिक्षा
- बच्चों पर केंन्द्रित जरूरत पर आधारित शिक्षा
- सीखने की प्रक्रिया में हर बच्चे की प्रतिभा को अधिकाधिक करना।

ये संकट प्रमुख भारतीय नीति दस्तावेज में शामिल है, जिनमें शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति (एन. पी. ई. 1986) द नेशनल करिकुलम फॉर एलीमेंट्री एंड सेकंडरी एजुकेशन (1988) और द रिवाइज्ड एन.पी. ई. एंड प्रोग्राम फॉर एक्शन (1992) आदि शामिल है।

गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा

अभी हाल ही में 2005 के राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एनसीएफ) ने एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान किया है, जिसमें सभी बच्चों को गुणवत्तापूर्ण समावेशी शिक्षा प्रदान करने के तरीके शामिल किए गए हैं। वह शिक्षकों द्वारा निम्नलिखित कार्यो को करने की आवश्यकता को स्पष्ट करता है–

- हर बच्चे की प्राकृतिक दृश्यावली के प्रति संवेदनशीलता होना।
- बच्चे पर केंद्रित, सामाजिक रूप से प्रासंगिक और न्यायोचित नियोजन सीखने की प्रक्रिया प्रदान की जाती है।
- उनके सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में विविधाएँ भरती है।

यूनेस्को के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल छात्रों का ज्ञानात्मक विकास करना नही बल्कि छात्रों के क्रियात्मक विकास पर भी बल देना है। यह छात्रों को करके सीखने को अलग शिक्षा मानते है और समान शिक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर आधारित होते है और इसका प्रयोग छात्रों के लिए आवश्यक होता हैं।

व्यक्तियों के व्यक्तित्व का निर्माण करना उनके सामाजिक आर्थिक राजनैतिक सांस्कृतिक गुणों का विकास करना। छात्रों को इस तरह तैयार करना कि वह देश काल विशिष्ट के अनुसार समाज के साथ समन्वय स्थापित कर सकें। छात्र अपने सामाजिक कर्त्तव्यों के भिन्न–भिन्न प्रकार के सक्षम होते हैं।

अधिगम शैली से संबंधित शोध साहित्य अध्ययन

पंवार (2015). के अनुसार शोध अध्ययन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली के संदर्भ में अध्ययन किया गया। इस शोध में न्यादर्श का चयन उद्देश्यपरक यादृच्छिक न्यादर्श विधि के द्वारा किया गया। न्यादर्श के रूप में इंदौर शहर के 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया। शोध के लिए सर्वे विधि का प्रयोग किया गया। शोधार्थी द्वारा कमलेश झा द्वारा निर्मित अधिगम शैली मापनी का प्रयोगकर प्रदत्तों का संकलन किया गया। यह मापनी 6 अधिगम शैली का आंकलन करती है। प्रदत्तों के विश्लेषण (x^2) सांख्यिकी प्रविधि द्वारा किया गया। प्राप्त परिणामों से प्रदर्शित हुआ कि विभिन्न संकाय के विद्यार्थी समान अधिगम शैली को अपनाते है।

अधिगम शैली वह तरीका है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने चित्त को एकाग्र करके प्रक्रिया प्रारंभ करता है तथा नई एवं जाटिल जानकारी को विभिन्न धारक माध्यमों से स्थाई करता है। यद्यापि कुछ

प्रतिभाशाली लोग बिना किसी अधिगम शैली का उपयोग किए प्रभावी रूप से सीख सकते है जबकि निम्न उपलब्धि वाले, विशेष अधिगम शैली के साथ अच्छा प्रदर्शन करते है। अधिगम शैली वह मार्ग है जिसके द्वारा व्यक्ति अपना ध्यान केंद्रित करता है तथा नये और कठिन प्रश्नों एवं कौशलों को अपने मस्तिष्क में संग्राहित कर लेता है वे न तो भौतिक साधन है, विधियाँ है और न ही कौशल है जिनका कि व्यक्ति सीखने में प्रयोग करता है ये तो केवल वे साधन है जो व्यक्ति की शैली को पूर्ण करते है।

रोलांडो (2020). के शोध अध्ययन के अनुसार शारीरिक और व्यावसायिक चिकित्सा में आवास तब होता हैं जब रोगी नए कौशल सीखता है और पुनर्वास तब होता हैं जब व्यक्ति पुराने अनुकूली कौशलों को फिर से सीखता है, जैसा कि बुद्धिमता के साथ होती है जब कोई व्यक्ति वृद्धावस्था में पहुँचता है तो सीखने की प्रक्रिया अचानक नहीं बदलती है, लेकिन प्रदर्शन में अंतर बताया गया है। सीखना और प्रदर्शन समान नहीं है। सीखने के कार्य पर खराब प्रदर्शन का मतलब यह हो सकता है कि अपर्याप्त शिक्षा हुई है कि सीखने को एक नए वातावरण या कार्य में स्थानांतरित नहीं किया गया है या यह कि प्रदर्शन प्राप्त सीखने की सीमा को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं करता है। सीखने के कार्य में भाग लेने की किसी व्यक्ति की क्षमता को प्रभावित करने वाले प्रमुख चर में बुद्धिमत्ता, वर्षों से अर्जित सीखने के कौशल और सीखने की शैली का लचीलापन शामिल हो सकता है। गैर–संज्ञानात्मक कारकों का भी किसी व्यक्ति के प्रदर्शन पर गहरा असर हो सकता है। गैर–संज्ञानात्मक कारकों में दृश्य और श्रवण की क्षीणता स्वास्थ्य की स्थिति, सीखने के लिए प्रेरणा चिंता का स्तर जिस गाति से उत्तेजना और सीखने की गति होती है और वस्तुओं या कार्यो के लिए व्यक्ति के लिए सार्थकता शामिल होती है। शोध से ज्ञात होता है कि जीवनकाल में सीखने की शैली बदल जाती है और जब निर्देशात्मक दृष्टिकोण उनकी सीखने की शैली से मेल खाते है तो बेहतर सीखते है।

व्यक्तित्व से संबंधित शोध साहित्य अध्ययन

मोहंती (2014). के शोध अध्ययन व्यक्तिव विकास और मूल्य शिक्षा उनके सहसंबंध का एक अनुभव जन्म अध्ययन में ज्ञात हुआ कि औपाचारिक और गैर औपचारिक शिक्षण संस्थानों में मूल्य शिक्षा को अनिवार्य बताया जा सकता है। अध्ययन में बताया गया कि शिक्षा का मानव व्यक्तित्व पर स्थायी प्रभाव पड़ता है। यह माना जाता हैं कि स्कूलों और कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले जीवन जीने के लिए एक व्यक्ति की नींव रखते है। यह मूल्यांकन करने के कई तरीके हो सकते है कि मानवीय मूल्यों की शिक्षा एक छात्र में सद्गुणों को विकसित करती है या नहीं।

झाई एवं करंजानापुन, (2020). के प्रस्तुत शोध अध्ययन कुनमिंग, युन्नान प्रांत, चीन में युन्नान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में छात्रों की धारणाओं में अंग्रेजी शिक्षको के व्यक्तित्व और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध में शोध कार्य किए। अध्ययन से पता चला कि युनान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में अंग्रेजी जुनियर शिक्षकों के व्यक्तित्व में सहमति, कर्त्तव्यनिष्ठा, बर्हिर्मुखता, विक्षिप्तता और खुलापन है। अध्ययन से यह भी पता चला कि युनान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में अंग्रेजी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर प्रभावी था। परिणामों से ज्ञात हुआ कि चुनमिंग युनान प्रांत चीन में युनान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में छात्रों की धारणा से अंग्रेजी शिक्षकों के व्यक्तित्व और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था। विक्षिप्ता और खुलापन है। अध्ययन से यह भी पता चला कि युनान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में अंग्रेजी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर प्रभावी था।

Corresponding Author: jayatisahu470@gmail.com

परिणामों से ज्ञात हुआ कि कुनमिंग युनान प्रांत चीन में युनान विश्वविद्यालय के डियान्ची कॉलेज में छात्रों की धारणा से अंग्रेजी शिक्षकों के व्यक्तित्व और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध था।

वर्मा (2021). के शोध अध्ययन के अनुसार बच्चों के लिए व्यक्तिव विकास के महत्व को समझने पर प्रकाश डाला। अध्ययन के अनुसार व्यक्तिव विकास को समझने के लिए बच्चों को तीन दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है। पहला सामाजिक सेंटिग या प्रकृति हैं जिसमें प्रत्येक बच्चा रहता है। विशेष रूप से ऐसे रिश्ते जो सुरक्षा, मार्गदर्शन और ज्ञान प्रदान करते है। दूसरी जैविक परिपक्वता हैं जिसे 'पोषण' के रूप में संदर्भित किया जाता है जो सामाजिक और भावानात्मक कौशल विकसित करने का समर्थन करता है और स्वभावगत व्यक्तित्व को रेखांकित करता है। तीसरा बच्चे अपना सामाजिक जगत का चित्रण करते है। व्यक्तित्व विकास को मनौवैज्ञानिक विकास के इन सामाजिक, जैविक और प्रतिनिधित्वात्मक पहलुओं के बीच लगातार बातचीत के रूप में माना जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति –2020 का एक प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थियों का चरित्र निर्माण भी है, ताकि विद्यार्थियों के जीवन के सभी पक्षों और क्षमताओं का संतुलित विकास हो सकें। भारतीय चिंतन परंपरा में चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तिव विकास शिक्षा का महत्वपूर्ण लक्ष्य माना जाता है। वर्तमान युग में चरित्र निर्माण और समग्र व्यक्तित्व विकास की जरूरत और बढ़ गई है। इस नीति का उद्देश्य ऐसे नागरिकों का निर्माण करना है जो विचारों से कार्य व्यवहार से एवं बौद्धिकता से भारतीय बने। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के अलग–अलग स्तरों पर सभी विषयों में भारतीय ज्ञान परंपरा, कला, संस्कृति एवं मूल्यों का समावेश करने की बात कही गई है।

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता हेतु चुनौतियाँ

माध्यमिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता हेतु निम्न चुनौतियों पर ध्यान देना होगा–

1. सातवें अखिल भारतीय विद्यालयी शिक्षा सर्वेक्षण 2020 के अनुसार माध्यामिक शिक्षा में छात्रों का सफल नामांकन 45–82 प्रतिशत था, जबकि प्राथमिक शिक्षा में सफल अनुपात नामांकन 93–92 प्रतिशत था अर्थात 56 प्रतिशत छात्र माध्यमिक शिक्षा से वंचित है।
2. कोठारी आयोग 1964–66 ने सुझाव दिया था कि शिक्षा पर आबंटन का 2/3 विद्यालयी शिक्षा एवं 1/3 उच्च शिक्षा पर खर्च किया जाना चाहिये, परंतु आज शिक्षा पर आबंटित प्रावधान के अंतर्गत 50 प्रतिशत सर्वाधिक प्राथमिक शिक्षा पर खर्च किया जा रहा हैं।
3. माध्यमिक शिक्षा आयोग ने माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यक्रम शिक्षण विधियाँ, शिक्षक परीक्षा प्रणाली, शिक्षक–छात्र अंतक्रिया आदि संबंधित कमियों का उल्लेख किया है, इन्हें दूर किया जाना चाहिए।
4. माध्यमिक विद्यालयों में शिक्षण प्रणाली चॉक एंड टॉक विधि तक सीमित ना हो, अध्यापन कार्य केवल व्यवस्था विधि पर आधारित ना हो।
5. माध्यमिक शिक्षा में सृजनात्मकता व जिज्ञासा का पूर्ण अभाव है।
6. माध्यमिक शिक्षा प्रणाली में प्रचलित शिक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन सिर्फ छात्रों के संज्ञानात्मक विकास तक सीमित हैं भावात्मक व क्रियात्मक पक्ष पूर्णताः उपेक्षित है। जिसमें छात्रों की निर्णय शक्ति तर्क शक्ति, कल्पना शक्ति एवं आलोचनात्मक मूल्यांकन का अभाव दिखाई देता है।

7. माध्यमिक स्तर पर प्रचलित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया केवल स्मृति स्तर के शिक्षण तक सीमित है, जो रहने पर बल देती है। इसमें अवबोध, परावर्तन, संश्लेषण, विश्लेषण का अभाव दिखाई देता है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु समाधान

वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा में गुणवत्ता उन्नयन हेतु कुछ समाधान है। माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता बनाये रखने हेतु सर्वव्यापीकरण एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। सर्वशिक्षा अभियान की तर्ज पर राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान की अनुप्रयोगात्मक उपादेयता से इंकार नहीं किया जा सकता। इसकी गुणवत्ता हेतु कुछ समाधान निम्न है–

1. शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर बालक व बालिका महत्वपूर्ण है उनका शैक्षाणिक विकास उनकी अभिरूचि एवं क्षमता योग्यता के अनुरूप किया जाना चाहिए।
2. प्रत्येक स्तर पर ही विषय वस्तु को महत्व दिया जाना चाहिये ताकि पाठ्यक्रम हस्तान्तरण में निर्देशात्मक अनुदेशात्मक शैली का स्थान सृजनात्मक शैली ले सकें। जहाँ बच्चे स्वयं नये ज्ञान का सृजन कर सकें।
3. शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को स्मृति के स्तर से अवबोध स्तर में शिक्षण की तरफ उन्मुख किया जाये।
4. माध्यमिक शिक्षा की शिक्षण पद्धति को सिर्फ 'चॉक एण्ड टॉक' से सूचना व संचार तकनीक (ई–एजुकेशन, टीचिंग एवं लर्निग) की तरफ प्रतिमान परिवर्तन किया जाये।
5. माध्यमिक शिक्षा को सिर्फ सूचनात्मक सैद्धांतिक एवं सज्ञानात्मक न बनकर इसे भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों के समन्वित विकास हेतु प्रोत्साहित किया जावें।
6. माध्यमिक विद्यालयों में ट्यूशन और कोचिग को पूर्णतः प्रतिबंधित कर शिक्षक छात्रों में कक्षा शिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण एवं कार्य संस्कृति विकसित की जाए।
7. माध्यमिक विद्यालयों की परीक्षा पद्धति में परिवर्तन करके 25–40 प्रतिशत लघुउत्तरीय व शेष बहुविकल्पीय प्रश्नों में समहित कर छात्रों के तनाव को कम किया जायें।
8. भाषा शिक्षण में परस्पर संवा को महत्व दिया जाये। ताकि शिक्षण के प्रारंभिक सोपान में ही पढ़ने लिखने का कौशल विकसित हो सकें।
9. माध्यमिक शिक्षा के लिये धन का आंबटन प्राथमिक शिक्षा के भांति सुनिश्चित किया जाये, क्योंकि सर्वशिक्षा अभियान भी माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता से प्रत्यक्षत संबंधित हो।

निश्कर्श

शिक्षा समाज का प्रेरक बल है और शिक्षक उसकी प्रेरणा शिक्षा ही मानवीय और नैतिक मूल्यों की स्थापना का सशक्त माध्यम है। माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा व्यवस्था की महत्वपूर्ण कड़ी है। यह प्राथमिक व उच्च शिक्षा के बीच की कड़ी है। प्राथमिक शिक्षा की सहभागिता बुनियादी शिक्षा अभावों से मुक्ति के मूल कारक के रूप में कार्य करती है जबकि माध्यमिक शिक्षा आर्थिक रिवाज तथा सामाजिक न्याय की स्थापना को सुविधाजनक बनाती है।

संदर्भ ग्रंथः–

- बाबू, यू. एम. एवं गणेशन, के. (2020). हायर सेकेण्डरी स्कूल के छात्रों की सीखने की शैली पर एक अध्ययन, ***शानलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन*** 9(9): 163–168) डीओआई : 10.34293/education.v 911.3389.
- झाई, जे. ओः एवं करंजनापुन. एस. (2020). कुनमिग, युनान प्रांत, चीन में युनान विश्वविद्यालय में डियान्च कॉलेज में छात्रों की धारणाओं से अंग्रेजी शिक्षको के व्यक्ति और शिक्षण प्रभावशीलता के बीच संबंध 12(2).
- मिश्रा, के (2016). रीवा जिले के माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास की समीक्षात्मक अध्ययन, ***इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस एजुके�ान***, ISSN 2455–512.
- पंवार, एन (2015) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों की अधिगम शैली का तुलनात्मक अध्ययन, संदर्भ (वैश्विक शैक्षिक परिप्रेक्ष्य), 5 (1 एवं 2), PP 21-29 न्यू दिल्ली पब्लिशर.
- शर्मा, डॉ. के (2020). माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण बनाने की आवश्यकता, आई जे. सी. आर टी, आई. एस. एस. एन–2882.
- सोनबेर, बी. (2011). अधिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया आगरा प्रकाशन आईएसबीएन –978–81–8465–425–7 P–45.
- टी. शैलेडो, पीटी लाजारो (2020) एक सीखने की शैली का एक व्यक्ति का पंसदीदा तरीका पुराने व्यस्क सीखने की शैली और संचार.
- वर्मा पी. (2021). बच्चों के लिए व्यक्तित्व विकास के महत्व को समझना.

Website -

- https://leverageetu.com>Blog
- https://sstmadter.com>quality.edu.
- https://www/kidschaupal.com
- https://www.amarugala.com
- http://leverageedu.com>
- http://www.open.edu>